अमर उजाला my city हिसार शुक्रवार • 21
amarujala.com

बीटल नस्ल की बकरियों से चार माह में पैदा हुए छह मेमने

पायलट प्रोजेक्ट के तहत केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म हिसार को मिली हैं बकरियां, पोल्ट्री, खरगोश व मछली पालन की

जीतेंद्र जीत

हिसार। केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म में इंटेग्रेटिड पायलट प्रोजेक्ट के तहत बीटल नस्ल की बकरियों से चार माह में छह मेमने मिले हैं। खास बात यह है कि इनमें से एक मेमने का वजन सामान्य से 4 से 5 किलोग्राम अधिक है। सकारात्मक परिणामों से फार्म के अधिकारी में उत्साह है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत फार्म में बकरियों के अलावा, मुर्गी, खरगोश और मछलियों को तैयार किया जा रहा है।

केंद्रीय कैबिनेट मंत्री गिरीराज सिंह द्वारा केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म हिसार को मोरिंगा घास पर आधारित इंटेग्रेटिड पायलट प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी सौंपी थी। इसके तहत फार्म में बकरियां, मुर्गी, खरगोश और मछली को विशेष रूप से तैयार किया जाना था।

बीटल नस्ल की बकरी से पैदा हुआ मेमना। - अमर उजाला

नवंबर 2019 के पहले सप्ताह में प्रोजेक्ट के तहत फार्म अधिकारियों ने फार्म निदेशक डॉ. एके मल्होत्रा के निर्देशन में 26 बकरियां, 190 मुर्गी, 26 खरगोश व 2500 से 3000 मछलियों को अलग से तैयार करना शुरू किया। चार माह बाद बकरियों का परिणाम आया। इसमें बीटल नस्ल की बकरियों से छह मेमने पैदा हुए, जिनमें दो मेल हैं, जबकि चार फीमेल हैं। एक मेमने का वजन सामन्यतः 7 से 8 किलोग्राम होता है, लेकिन पैदा हुए छह में से एक मेमने का वजन एक माह में 11.990 किलोग्राम रिकॉर्ड किया गया।

इस मेमने को भी अन्य मेमनों के साथ फ्री फीडिंग सिस्टम के तहत ही रखा गया है और इसको कोई स्पेशल फीडिंग नहीं करवाई गई है।

फार्म को कृत्रिम गर्भाधान के लिए एआई किट भी हुई थी जारी: फार्म को बीटल नस्ल की बकरियों के कृत्रिम गर्भाधान के लिए केंद्र द्वारा 13-14 जनवरी को एआई किट भी जारी की गई थी। बकरियों की नस्ल सुधारने और लुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए यह किट केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय द्वारा उत्तर प्रदेश के पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान में आयोजित वर्कशॉप के दौरान केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह द्वारा प्रदान की गई थी।

यह होगा फायदा

बीटल नस्ल के उत्पन्न बकरियों से देश के सीमांत क्षेत्र के किसानों द्वारा पाली जा रहीं बकरियों से कृत्रिम गर्भाधान कराया जाएगा। फार्म के वैज्ञानिकों का मानना है कि शुरुआती परिणाम काफी सकारात्मक आए हैं और आने वाले समय में इसके और भी अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे।

इंटेगटेड पायलट प्रोजेक्ट का सकारात्मक परिणाम

एक मेमने का वजन केवल एक माह में सामान्य से 4-5 किलोग्राम अधिक

> केंद्रीय नेतृत्व से जो जिम्मेदारी मिली है, उसके लिए फार्म के वैज्ञानिक मेहनत और निष्ठा से लगे हुए हैं। शुरुआती परिणाम शानदार मिले हैं और इनका श्रेय फार्म के डॉ. रुंतु गोगोई व उनकी टीम को जाता है। इस पर भी शोध किया जा रहा है कि सामान्य फीडिंग के बावजूद एक मेमने का वजन कैसे बढ़ा। इन परिणामों का लाभ आने वाले समय में देश के पशु पालकों को मिलेगा।
>
> – डॉ. एके मल्होत्रा, निदेशक प्रभारी, केंद्रीय भेड़, प्रजनन फार्म, हिसार